

STUDY MATERIAL FOR SEM - 6 SANSKRIT HONS STUDENTS

TEACHERS`NAME- ARPITA PRAMANIK

DEPARTMENT OF SANSKRIT

K.C.COLLEGE, HETAMPUR, BIRBHUM

TOPIC- SANSKRIT KARAKA(SHORT QUESTION)

PAPER-CC-14

DATE-19-5-2020

संक्षिप्त प्रश्नावली

१। क्रियाविशेषणे द्वितीयायाः उदाहरणम् प्रदीयताम्।

क्रियाविशेषणे द्वितीयायाः उदाहरणम्-मधुरं भाषते।

२। “अभुक्तस्य न”- व्याख्या कार्या।

“अभुक्तस्य न” इति वार्तिकेन अनाहारे द्योत्ये उपपूर्वां वसतेराधारस्य कर्मसंज्ञा नैव स्यात्। यथा-साधुः वने उपवसति। उपवासार्थे ‘वने’ इत्यत्र कर्म न स्यात्। परन्तु, ‘एकादशीमुपवसन्ति निरशुभक्षाः’ इत्यत्र उप+वस् धातोः उपवासार्थसन्नेऽपि द्वितीया स्यात्। अत्र नायं ‘अभुक्तस्य न’ इति नियमस्य विषयः। अत्र ‘कालाधनोरत्यन्तसंयोगे’ इत्यनेन व्याप्त्यर्थे द्वितीया प्रयुक्ता।

३। कर्मप्रवचनीयः--

कर्म क्रियां प्रोक्तवन्तु इति कर्म+प्र-वच्+अनीयर्=कर्मप्रवचनीयः। इत्यत्र ‘कर्म’ इति शब्दस्य अर्थः क्रिया, न कर्मकारकम्। अतः, शब्दस्य व्युत्पत्तिगतम् अर्थम्-येन क्रिया उक्तः द्योतितः वा भवति। पाणिनिना “कर्मप्रवचनीयाः” इत्यादिसूत्रैः कर्मप्रवचनीयसंज्ञा विधीयते। यत्र यत्र कर्मप्रवचनीयसंज्ञा विधीयते तत्र तत्र “कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया” इति सूत्रेण द्वितीयाविभक्तिः भवति। यथा-अनुहरिं सुराः, उपहरिं सुराः, वृक्षं प्रति विद्योतते विद्युत्।

४। कर्मप्रवचनीययोगे का का विभक्तिः भवन्ति? उदाहरणम् प्रदीयताम्।

कर्मप्रवचनीययोगे द्वितीया, पञ्चमी, सप्तमी विभक्तिः च भवन्ति। उदाहरणम् यथाक्रमे-अनु हरिं सुराः। अप हरेः संसारः। उप परार्थे हरेः गुणाः।

५। लक्षणार्थे ‘अनु’ इत्यस्य कर्मसंज्ञाविधायकम् सूत्रोल्लेखं कुरु। उदाहरणम् प्रदीयताम्।

लक्षणार्थे ‘अनु’ इत्यस्य कर्मसंज्ञाविधायकम् सूत्रम्-“अनुर्लक्षणे”। उदाहरणम्-जपमनुनिशम्य प्रावर्षत् मेघः।

६। कर्मप्रवचनीययुक्ते का विभक्तिः स्यात्? सूत्रोल्लेखम् कुरु।

कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया विभक्तिः स्यात्। सूत्रम्-“कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया”।

७। सहा(तृतीया)र्थे ‘अनु’ इत्यस्य कर्मप्रवचनीयसंज्ञाविधायकम् सूत्रोल्लेखं कुरु।

উদাহরণম্ প্রদীয়তাম্।

সহার্থে(তৃতীয়ার্থে)‘অনু’ ইত্যস্য কর্মপ্রবচনীয়সংজ্ঞাবিধায়কম্ সূত্রম্-“তৃতীয়ার্থে”
উদাহরণম্-নদীম্ অনু অবসিতা সেনা।

৮। ব্যাপ্তিঃ কিম্? ব্যাপ্তার্থে কা বিভক্তিঃ ভবতি?

ব্যাপ্তিঃ পাণিনীয়ব্যাকরণে পারিভাষিকশব্দমেকম্। ব্যাপ্তিঃ শব্দস্য অর্থঃ
নিরন্তরসংযোগঃ অত্যন্তসংযোগঃ বা। ব্যাপ্তার্থে দ্বিতীয়া বিভক্তিঃ ভবতি।
সূত্র-“কালান্বনোরত্যন্তসংযোগে”। উদাহরণম্-মাসং কল্যাণী, মাসম্ অধীতে
(কালবাচক)। ক্রোশং কুটীলা নদী, ক্রোশম্ অধীতে।(পথের পরিমাণবাচক)।

৯। “কালান্বনোরত্যন্তসংযোগে” সূত্রে ‘অত্যন্তসংযোগে’ শব্দস্য অর্থঃ কিম্?
“কালান্বনোরত্যন্তসংযোগে” সূত্রে ‘অত্যন্তসংযোগে’ শব্দস্য অর্থঃ অন্তঃ
বিরামম্ অতিক্রান্তঃ অত্যন্তঃ, স চাসৌ সংযোগশ্চেতি। অত্যন্তসংযোগঃ
নিরন্তরসম্নিকর্ষ ইত্যর্থঃ।

১০। “বিবক্ষাতঃ কারকানি ভবন্তি”-ব্যাখ্যা কার্যা।

বক্তৃঃ ইচ্ছানুসারে কারকানাং পরিবর্তনং ভবন্তি। “ভবন্তি হি বিবক্ষাতঃ
কারকানি যথা তথা।” যেমন-অধিকরণকারকস্য বিবক্ষা-স্থূল্যাং পচতি।
শেষত্বে বিবক্ষা-রজকস্য বঙ্গং দদাতি। সম্প্রদানস্য বিবক্ষা-রজকায় বঙ্গং
দদাতি।

১১। প্রযোজক কর্তা বা হেতু কর্তা ? উদাহরণম্ প্রদীয়তাম্।

গিজন্তধাতোঃ প্রয়োগেন যঃ কর্তাম্ কার্যায় প্রবর্তয়তি, সঃ প্রযোজককর্তা
হেতুকর্তা বা। সূত্র-“তৎ প্রযোজকো হেতুশ্চ”। আচার্যেন ভট্টোজীদীক্ষিতেন
আহ-“স্বতন্ত্রস্য প্রযোজকো যোঃর্থঃ স হেতুসংজ্ঞঃ কর্তৃসংজ্ঞশ্চ স্যাৎ।”
প্রযোজককর্তরি প্রথমা স্যাৎ। যথা-প্রভুঃ ভূত্যেন কার্যং কারয়তি।

১২। করণকারকবিধায়কম্ প্রধানম্ সূত্রম্ কিম্? করণকারকে কা বিভক্তিঃ ভবতি?
করণকারকবিধায়কম্ প্রধানম্ সূত্রম্-“সাধকতমং করণম্।” করণকারকে তৃতীয়া
বিভক্তিঃ ভবতি।

১৪। “সাধকতমং করণম্” সূত্রে ‘তমপ্’ গ্রহণস্য সার্থকতা কিম্? উদাহরণ
-সহকারেণ ব্যাখ্যা কার্যা।

কারকপ্রকরণে “সাধকতমং করণম্” এতৎ-সূত্রাদন্যত্র গৌণমুখন্যায়ো ন
প্রবর্ততে ইতি জ্ঞাপনায় ইই তমব্গ্রহণম্। অন্যথা “আধারোঃধিকরণম্”

सर्पिरित्यादौ मुख्याधारस्यैव अधिकरणत्वं स्यात्, गङ्गायां घोषः इत्यादौ
लाङ्गणिके ऎकदेशिके च अधिकरणता न जायते।

१५। अनुक्त कर्त्तरि करणे च का विभक्तिः भवति? सूत्रोल्लेखं कुरु।

अनुक्त कर्त्तरि करणे च तृतीया विभक्तिः भवति। सूत्र- “कर्त्करणयोस्तृतीया”। यथा-रामेण
वाणेन हतो बाली। अत्र ‘रामेण’ कर्त्तरि तृतीया, ‘वाणेन’ करणे तृतीया।